वीरांगना रानी दुर्गावती का साम्राज्य और युद्धनीति

आनंद सिंह राणा

(मृत्यु तो सभी को आती है आधार सिंह, परंतु इतिहास उन्हें ही याद रखता है जो स्वाभिमान के साथ जिये और मरे)–रानी दुर्गावती (आत्मोत्सर्ग के समय अपने सेनापति से कहा था) पूर्व पीठिका भारत के हृदय-स्थल में स्थित त्रिपुरी के महान् कलचुरि वंश का 13वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अवसान हो गया था। फलस्वरूप सीमावर्ती शक्तियाँ इस क्षेत्र को अपने अधीन करने के लिए लालायित हो रही थीं। अंततः इस संक्रांति काल में एक वीर योद्धा जादोराय (यदुराय) ने, तिलवाराघाट निवासी एक महान् ब्राण संन्यासी सुरभि पाठक के भगीरथ प्रयास से, त्रिपुरी क्षेत्रंतर्गत, गढ़ा-कटंगा क्षेत्र में गोंडवंश की नींव रखी। कालांतर में यह साम्राज्य महान गोंडवाना साम्राज्य के नाम से जाना गया। गोंडवाना साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का प्रारंभ 48वीं पीढ़ी के महानायक राजा संग्रामशाह (अमानदास) के समय हुआ और इनकी पुत्रवधू वीरांगना रानी दुर्गावती का समय गोंडवाना साम्राज्य के स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र रानी दुर्गावती के साम्राज्य और युद्धनीति पर केंद्रित है।

भारतीय इतिहास-लेखन के साथ छल–'रानी दुर्गावती का साम्राज्य और युद्धनीति' विषय पर लिखने से पूर्व इतिहासकार होने के नाते मेरा प्राथमिक कर्तव्य है कि भारतीय इतिहास लेखन के साथ जिन इतिहासकारों और उनके समूह ने छल किया है उन इतिहासकारों व उनके समूह से भलीभाँति परिचय करा दूँ, ताकि आप सतर्क होकर ये जान सकें कि क्या छल किए गए हैं? प्रथम छल समूह–अबुल फज़ल, बदायूँनी और फरिश्ता सहित फारसी इतिहासकार एवं इन पर परजीवी अँग्रेज़ी इतिहासकारों का है,

जिन्होंने रानी दुर्गावती एवं गोंडवाना साम्राज्य के इतिहास को एक छोटी-सी कहानी बना के छोड़ दिया और अकबर जैसे धूर्त, लंपट और चालाक शासक को महान बना डाला, जिसने एक विधवा महिला शासक रानी दुर्गावती और मानव-धर्म के प्रेमी गोंडों को अकारण बर्बाद किया। द्वितीय छल समूह-प्रथम छल समूह से जनित कांग्रेस से समर्थन प्राप्त और दिल्ली विश्वविद्यालयों जैसे विश्वविद्यालयों में रोपित मार्क्सवादी एवं परजीवी इतिहासकारों का समूह जिनके प्रमुख स्तंभ इरफान हबीब, रोमिला थापर, सुमित सरकार और विपिनचंद्र आदि हैं, जिन्होंने भारतीय इतिहास को बाँझ और निष्प्राण बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यही कदाचरण रानी दुर्गावती और गोंडवाना के इतिहास के साथ भी हुआ। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब रानी दुर्गावती पर डाक टिकट जारी करने की बात हुई तो दिल्ली के रिकॉर्ड में रानी दुर्गावती के संबंध में कुछ भी सार्थक तत्व उपलब्ध नहीं थे जबकि महारानी दुर्गावती का साम्राज्य लगभग इंग्लैंड के बराबर था। 16 वर्ष का शासनकाल था। पूरे भारत में एकमात्र राज्य जहाँ कर सोने के सिक्कों एवं हाथियों तक में चुकाया गया था, जिसके शौर्य, पराक्रम, प्रबंधन और देशभक्ति के सामने आस्ट्रेलिया की मारिया थेरेसा, रूस की कैथरीन द्वितीय और इंग्लैंड की एलिज़ाबेथ प्रथम कहीं नहीं लगतीं (केवल जॉन ऑफ आर्क को छोड़ दिया जाए वह भी युद्ध कला में) ऐसे में उपर्युक्त इतिहासकारों के समूह में से मध्यकालीन भारत का इतिहास लिखने वाले इतिहासकारों ने रानी दुर्गावती एवं गोंडवाना के इतिहास को गौण स्वरूप प्रदान करते हुए छिन्न-भिन्न रूप में प्रस्तुत कर छल किया है। इन धूर्त इतिहासकारों की धूर्तता तो देखिए कि जिनका इतिहास लिखा उनके स्रोतों को नष्ट किया और उनके बोधगम्य इतिहास का उपहास उड़ाया है। इतिहास संकलन समिति महाकोशल प्रांत की ओर से हमने यह धृष्टता और मूर्खता नहीं की।

गोंडवाना साम्राज्य और उसका स्वर्ण युग–गोंडवाना साम्राज्य का चरमोत्कर्ष 14वीं शताब्दी के अंत में गोंडवंश के महान प्रतापी राजा संग्रामशाह के शासनकाल में प्रारंभ हुआ। संग्रामशाह का वास्तविक नाम अमानदास था, जिसकी पुष्टि दमोह के पास ठर्रका ग्राम में प्राप्त एक शिलालेख से होती है। रामनगर प्रशस्ति में लिखा है कि "प्रतापी

अर्जुन सिंह का पुत्र संग्रामशाह था। जिस भाँति विशाल कपास का ढेर एक छोटी-सी चिंगारी से नष्ट हो जाता है, उसी भाँति उसके शत्रु तेजहीन हो गए थे। मध्य काल का सूर्य भी उसके प्रताप के सामने धूमिल-सा दिखाई देता था, मानो सारी धरती को जीत लेने का निश्चय किया हो। तद्नुसार उसने 52 गढ़ों को जीत लिया था। गोंडो में तो कहावत ही प्रचलित हो गई थी कि 'आमन बुध बावन में' ये गढ़ जबलपुर, सागर, दमोह, सिवनी, मंडला, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, नागपुर, होशंगाबाद, भोपाल और बिलासपुर तक फैले हुए थे। समकालीन इतिहासकारों की मानें तो 70 हजार गाँव थे जिनकी संख्या रानी दुर्गावती के समय 80 हजार तक हो गई थी। गोंडवाना या गढ़ा-कटंगा विस्तृत और संपन्न राज्य हो गया था, इसके पूर्व में झारखंड, उत्तर में रीवा का राज्य, दक्षिण में दक्षिणी पठार और पश्चिम में रायसेन प्रदेश था। इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम 300 मील तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 160 मील थी। इन सीमाओं को रानी दुर्गावती ने और बढ़ा लिया था। गोंडवाना साम्राज्य का क्षेत्रफल लगभग इंग्लैंड के क्षेत्रफल जितना हो गया था। विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण दिल्ली के सुल्तान या पड़ोस के कोई अन्य राजा गोंडवाना पर अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सके। उत्तर भारत में मुगल शासक हुमायूँ को शेरशाह ने बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में परास्त कर भारत से बाहर खदेड़ दिया और साम्राज्य विस्तार के लिए उद्यत हो गया। शेरशाह की धर्म की आड़ में विस्तारवादी नीति से कालिंजर के महान् शासक कीरत सिंह चिंतित हो गए थे, इसलिए शेरशाह सहित अन्य मुस्लिम आक्रांताओं को मुँह तोड़ जवाब देने के लिए गोंडवाना साम्राज्य के महान् राजा संग्रामशाह से मित्रता का प्रस्ताव रखा, जो एक वैवाहिक संबंध के रूप में फलीभूत हुआ। राजा संग्रामशाह और उनके सुपुत्र दलपतिशाह, राजा कीरत सिंह की सुपुत्री वीरांगना दुर्गावती के स्त्रियोचित सौंदर्य, शिष्टता, मधुरता और पराक्रम से बहुत प्रभावित थे, इसलिए संग्रामशाह ने कीरत सिंह से उनकी सुपुत्री का अपने पुत्र दलपतिशाह के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा, जो स्वीकार हुआ। दुर्भाग्य से सन् 1541 में राजा संग्रामशाह का निधन हो गया बावजूद इसके राजा कीरत सिंह ने अपना वचन निभाया और सन् 1542 में अपनी सुपुत्री वीरांगना दुर्गावती का विवाह राजा दलपतशाह

से कर दिया। सन् 1545 में शेरशाह ने कालिंजर पर आक्रमण किया और मारा गया। इस युद्ध में राजा कीरत सिंह भी शहीद हो गए जिससे वीरांगना दुर्गावती को धक्का लगा। सन् 1548 में पति दलपतशाह की आकस्मिक मृत्यु ने वीरांगना पर वज्रपात कर दिया। इस वज्रपात से वीरांगना दुर्गावती विचलित हुईं पर शीघ्र ही उन्होंने साहस के साथ अपने 5 वर्षीय अल्प वयस्क सुपुत्र वीरनारायण की ओर से गोंडवाना साम्राज्य की सत्ता सँभाल ली। इस तरह गोंडवाना साम्राज्य की वीरांगना रानी दुर्गावती का महान् साम्राज्ञी के रूप में उदय हुआ। रानी दुर्गावती ने 16 वर्ष शासन किया और यही काल गोंडवाना साम्राज्य का स्वर्ण युग था। गोंडवाना साम्राज्य राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में सुव्यवस्थित रूप से पल्लवित और पुष्पित होता हुआ अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचा। वर्तमान में प्रचलित जी.एस.टी. जैसी कर प्रणाली रानी दुर्गावती के शासनकाल में लागू की गई थी। फलस्वरूप तत्कालीन भारतवर्ष में गोंडवाना ही एकमात्र राज्य था जहाँ की जनता अपना लगान स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों के रूप में चुकाती थी। गढ़ा उन दिनों उत्तर-मध्य भारत का हिंदुओं का धार्मिक केंद्र बिंदु था, जहाँ कोई भी हिंदू अपनी इच्छानुसार धार्मिक अनुष्ठान कर सकता था, इसलिए इस स्थान को लघुकाशी वृंदावन कहा जाता था। उपरोक्तानुसार स्वर्ण युग के लिए आवश्यक सभी प्रतिमानों के आलोक में सिंहावलोकन करने पर यही प्रमाणित होता है कि यह काल गोंडवाना साम्राज्य का स्वर्ण युग था।

वीरांगना रानी दुर्गावती की युद्धनीति–रानी दुर्गावती की युद्धनीति और कूटनीति विलक्षण थी, जिसकी तुलना काकतीय वंश की वीरांगना रुद्रमा देवी और फ्रांस की जॉन ऑफ आर्क को छोड़कर विश्व की अन्य किसी वीरांगना से नहीं की जा सकती है। युद्ध के 9 पारंपरिक युद्ध व्यूहों में क्रमशः वज्र व्यूह, क्रौंच व्यूह, अर्धचंद्र व्यूह, मंडल व्यूह, चक्रशकट व्यूह, मगर व्यूह, औरमी व्यूह, गरुड़ व्यूह, और श्रीन्गातका व्यूह से परिचित थीं। इनमें क्रौंच व्यूह और अर्द्धचंद्र व्यूह में सिद्धहस्त थीं। क्रौंच व्यूह रचना का प्रयोग, जब सेना ज़्यादा होती थी, जिसमें क्रौंच पक्षी के आकार के व्यूह में पंखों में सेना और चोंच पर वीरांगना होती थीं और शेष अंगों पर प्रमुख सेनानायक होते थे। वहीं अर्धचंद्र

का प्रयोग दूसरी ओर जब सेना छोटी हो और दुश्मन की सेना बड़ी हो तब किया जाता था, जिससे सेना एक साथ ज़्यादा-से-ज़्यादा जगह से दुश्मन पर वार कर सके। वीरांगना की रणनीति अकस्मात् आक्रमण करने की होती थी। रानी दुर्गावती दोनों हाथों से तीर और तलवार चलाने में निपुण थीं। गोंडवाना साम्राज्य की सत्ता सँभालने के कुछ दिन बाद ही गढ़ों की संख्या 52 से बढ़कर 57 हो गई थी। वीरांगना ने एक बड़ी स्थायी और सुसज्जित सेना तैयार की, जिसमें 20 हजार अश्वारोही, एक सहस्र हाथी और प्रचुर संख्या में पदाति थे। वीरांगना रानी दुर्गावती के शौर्य, साहस एवं पराक्रम के संबंध में प्रकाश डालते हुए तथाकथित छल समूह के इतिहासकारों ने कुल 4 युद्धों का टूटा-फूटा वर्णन कर इतिश्री कर ली है, जबकि वीरांगना ने 16 युद्ध (छुटपुट युद्धों को छोड़कर) लड़े। 16 युद्धों में से 15 युद्धों में विजयी रहीं, जिसमें 12 युद्ध मुस्लिम शासकों से लड़े गए। उसमें से भी 6 मुग़लों के विरुद्ध लड़े गए। पिता राजा कीरत सिंह के साथ मिलकर, हनुमान द्वार का युद्ध, गणेश द्वार का युद्ध, लाल दरवाज़ा का युद्ध, बुद्ध भद्र दरवाज़ा का युद्ध (कालिंजर का किला अब कामता द्वार, पन्ना द्वार, रीवा द्वार है) लड़े गए जिसमें विजयश्री प्राप्त की। गोंडवाना की साम्राज्ञी के रुप में सत्ता सँभालते ही मांडू के अय्याश शासक बाज़ बहादुर ने गोंडवाना साम्राज्य पर दो बार आक्रमण किया परंतु रानी दुर्गावती ने दोनों बार जम कर ठुकाई कर दुर्गति कर डाली और मांडू तक खदेड़ा। बाज़ बहादुर जीवन-भर शरणागत रहा। आगे मालवा के सूबेदार शुजात की कभी हिम्मत नहीं हुई। शेरखान (शेरशाह) कालिंजर अभियान में मारा गया। कुछ दिनों बाद मुगलों ने पानीपत के द्वितीय युद्ध के उपरांत पुनः सत्ता हथिया ली और अकबर शासक बना। शीघ्र ही येन-केन प्रकारेण साम्राज्य विस्तार करना आरंभ कर दिया। रानी दुर्गावती के गोंडवाना साम्राज्य की संपन्नता और समृद्धि की चर्चा कड़ा और मानिकपुर के सूबेदार आसफ खाँ द्वारा मुग़ल दरबार में की गई। धूर्त, लंपट और चालाक अकबर ने लूट और विधवा रानी को कमजोर समझते हुए जबरदस्ती गोंडवाना साम्राज्य हथियाने के उद्देश्य से रानी को आत्मसमर्पण के लिए धमकाया परंतु गोंडवाना की स्वाभिमानी और स्वतंत्रता प्रिय वीरांगना रानी दुर्गावती नहीं मानीं। अकबर का संदेश था कि स्त्रियों

का काम रंहटा कातने का है, तो रानी ने संदेश के साथ एक सोने का पींजन भेजा और कहा कि आपका भी काम रुई धुनकने का है। अकबर तिलमिला गया और उसने आसफ खाँ को गोंडवाना साम्राज्य की लूट और उसके विनाश के लिए रवाना किया। इसके पूर्व अकबर ने दो गुप्तचरों क्रमशः गोप महापात्र और नरहरि महापात्र को भेजा परंतु वीरांगना ने दोनों को अपनी ओर मिला लिया। उन्होंने अकबर की योजना और आसफ खाँ के आक्रमण के बारे में रानी दुर्गावती को सब कुछ बता दिया। वीरांगना रानी दुर्गावती सतर्क हो गईं और सिंगोरगढ़ में मोर्चाबंदी कर ली। आसफ खाँ 6 हजार घुड़सवार सेना, 12 हजार पैदल सेना एवं तोपखाने तथा स्थानीय मुगल सरदारों के साथ सिंगोरगढ़ आ धमका। इधर रानी दुर्गावती के साथ उनके पुत्र वीरनारायण सिंह, आधार सिंह, हाथी सेना के सेनापति अर्जुन सिंह बैस, कुँवर कल्याण सिंह बघेला, चक्रमणि कलचुरि, महारुख ब्राण, वीर शम्स मियानी, मुबारक बिलूच, खान जहान डकीत, महिला दस्ता की कमान रानी दुर्गावती की बहन कमलावती और पुरागढ़ की राजकुमारी ने (वीरनारायण की होने वाली पत्नी) सँभाली। अविलंव युद्ध आरंभ हो गया।

सिंगोरगढ़ का प्रथम युद्ध–आसफ खाँ ने आत्मसमर्पण के लिए कहा, वीरांगना ने कहा कि किसी शासक के नौकर से इस संदर्भ में बात नहीं की जाती है। वीरांगना ने भयंकर आक्रमण किया, मुग़लों के पैर उखड़ गए, आसफ खाँ भाग निकला।

सिंगोरगढ़ का द्वितीय युद्ध–पुनः मुगलों के वही हाल हुए लेकिन मुग़लों का तोपखाना पहुँच गया और रानी को खबर लग गई उन्होंने गढ़ा में मोर्चा जमाया और सिंगोरगढ़ छोड़ दिया।

सिंगोरगढ़ का तृतीय युद्ध–मुग़लों का तोपखाना भारी पड़ गया और सिंगोरगढ़ हाथ से निकल गया।

अघोरी बब्बा का युद्ध–यह चौथा युद्ध था जिसका उद्देश्य मुग़ल सेना को पीछे हटाना था ताकि वीरांगना गढ़ा से बरेला के घने जंगलों की ओर निकल जाए। घमासान युद्ध हुआ और सेनानायक अर्जुन सिंह बैस ने आसफ खाँ को बहुत पीछे तक खदेड़ दिया। वीरांगना ने तोपखाने से निपटने के लिए एक शानदार रणनीति बनाई जिसके

अनुसार बरेला (नरई) के सकरे और घने जंगलों के मध्य मोर्चा जमाया ताकि तोपों की सीधी मार से बचा जा सके।

गौर नदी का युद्ध–वीरांगना रानी दुर्गावती के जीवन के 15वें और मुगलों से 5वें युद्ध में 22 जून 1564 को स्वतंत्रता, स्वाभिमान और शौर्य की देवी, विश्व की श्रेष्ठतम वीरांगना रानी दुर्गावती ने, प्रातः सेनानायक अर्जुन सिंह बैस के शहीद होने का समाचार मिलते ही 'अर्द्धचंद्र व्यूह' बनाते हुए 'गौर नदी के युद्ध' में आसफ खाँ सहित मुगलों की सेना पर भयंकर आक्रमण किया और पुल तोड़ दिया ताकि तोपखाना नरई (बरेला) न पहुँच सके। मुग़ल सेना तितर-बितर हो गई जिसको जहाँ रास्ता मिला भाग निकला। वीरांगना ने पुनः रात्रि में हमले की योजना बनाई परंतु सरदारों की असहमति के कारण निर्णय बदलना पड़ा। यहीं भारी चूक हो गई, यदि रात्रि में आक्रमण होता तो इतिहास कुछ और ही होता। अंततः वीरांगना ने नरई की ओर कूच किया और युद्ध के लिए 'क्रौंच व्यूह' रचना तैयार की। 23 जून 1564 को नरई में प्रथम मुठभेड़ हुई, रानी और उनके सहयोगियों ने मुग़लों की जमकर ठुकाई की। मुग़ल सेना भाग निकली और डरकर बरेला तक भागी। 23 जून की रात तक तोपखाना गौर नदी पार कर बरेला पहुँच गया। 23 जून की रात को घातक षड्यंत्र हुआ। आसफ खाँ ने रानी के एक छोटे सामंत बदन सिंह को घूस देकर अपनी ओर मिला लिया। उसने रानी की रणनीति का खुलासा कर दिया कि कल युद्ध में रानी मुगलों को घने जंगलों की ओर खींचेगी जहाँ तोपखाना कारगर नहीं होगा और सब मारे जाएँगे। आसफ खाँ डर गया, उसने उपचार पूछा। तब बदन सिंह ने बताया कि नरई नाला सूखा पड़ा है और उसके पास पहाड़ी सरोवर है जिसे यदि तोड़ दिया जाए तो पानी भर जाएगा और रानी नाला पार नहीं कर पाएँगी और तोपों की मार सीधी पड़ेगी। उधर रात में रानी को अनहोनी का अंदेशा हुआ। बहरहाल युद्ध की अंतिम घड़ी आ ही गई। वीरांगना ने क्रौंच व्यूह रचा। सारस पक्षी के समान सेना जमाई गई। चोंच भाग पर रानी दुर्गावती स्वयं और दाहिने पंख पर युवराज वीरनारायण और बाएँ पंख पर आधार सिंह खड़े हुए। 24 जून 1564 को प्रातः लगभग 10 बजे मोर्चा खुल गया। घमासान युद्ध प्रारंभ हुआ। पहले हमले में मुग़लों के पाँव

उखड़ गए। मुग़लों ने 3 बार आक्रमण किए और तीनों बार गोंडों ने जमकर खदेड़ा। इसलिए मुग़लों ने तोपखाना से मोर्चा खोल दिया। रानी ने योजना अनुसार जंगलों की ओर बढ़ना शुरू किया परंतु बदन सिंह की योजना अनुसार पहाड़ी सरोवर तोड़ दिया गया। नरई में बाढ़ जैसी स्थिति बन गई। अब रानी घिर गई। इसी बीच अपराह्न लगभग 3 बजे वीरनारायण के घायल होने की खबर आई। वीरांगना जरा भी विचलित नहीं हुई। आँख में तीर लगने के बाद भी जंग जारी रखी। मुग़ल सेना के बुरे हाल थे परंतु रानी को एक तीर गर्दन पर लगा, रानी ने तीर तोड़ दिया। हाथी सरमन के महावत को आधार सिंह ने पीछे हटने का आदेश दिया परंतु रानी समझ गई थीं कि अब वो नहीं बचेंगी। इसलिए अब वो गोल में समा गईं और भीषण युद्ध किया। जब उनको मूर्छा आने लगी तो उन्होंने अपनी कटार से प्राणोत्सर्ग किया। विश्व में ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं है–"आसफ़ खाँ से लड़कर तूने, अमर बनाया कोसल देश। अमर रहेगी रानी तू भी, अमर रहे तेरा संदेश"। अंत में इस पद से करें तो बेहतर रहेगा कि "चंदेलों की बेटी थी, गोंडवाना की रानी थी। चंडी थी रणचंडी थी, वह दुर्गावती भवानी थी।"

संदर्भ ग्रंथ, समाचार-पत्र और अन्य स्रोत

- जबलपुर गजेटियर, 1969, जिला गजेटियर विभाग, मध्य प्रदेश, भोपाल।
- डॉ. हीरालाल : एक संकलन, जबलपुर ज्योति, 1919, इन्टेक, जबलपुर।
- म.प्र. का इतिहास, लेखक, डॉ. हीरालाल।
- गढ़ा के गोंड राज्य का उत्थान एवं पतन, लेखक प्रो. सुरेश मिश्रा।
- वीरांगना का बलिदान, नगर निगम प्रकाशन, 1975, जबलपुर।
- दुर्गावती, नगर निगम प्रकाशन, 1965, जबलपुर।
- बुंदेलखंड का इतिहास, लेखक गोरेलाल तिवारी।
- रानी दुर्गावती और उनका शासनकाल, शोध-प्रबंध, डॉ. कल्पना जायसवाल।
- वार्ता साहित्य में उद्धृत भाव सिंधु, हरिहरनाथ।
- मध्य प्रदेश एक परिचय, जगमोहनदास की कर्मभूमि, 1990, सेठ गोविंददास ट्रस्ट, जबलपुर।
- रानी दुर्गावती की पुण्य स्मृति में नगर निगम द्वारा प्रकाशित पुस्तिका, जबलपुर।
- गोंडवाना की कथा-लेखक इरेचेस्टरटान।
- गढ़ा मंडला के गोंड राजा, राम भरोसे अग्रवाल।

- हिस्ट्री ऑफ इंडिया, एज टोल्ड वाय इट्स ओन हिस्टोरियन्स, जिल्द पाँच।
- जबलपुर अतीत दर्शन, लेखक महेश चंद्र चौवे, मदन मोहन उपाध्याय, कमिश्नर, 2003, जबलपुर, इन्टेक जबलपुर।
- अकबरनामा, लेखक अबुल फज़ल।
- तारीख-ए-फरिश्ता, लेखक फरिश्ता।
- मुन्तखब-उत-तवारीख, बदायूँनी।
- ताम्रपत्र, प्रशस्ति और जनश्रुतियाँ।
- इतिहास संकलन समिति, महाकोशल प्रांत द्वारा नई दुनिया समाचार-पत्र एवं पत्रिका, समाचार-पत्र प्रकाशित विभिन्न शोध।
- चित्रोत्पला रिसर्च जनरल, इतिहास संकलन, गोंडवाना संकलन समिति साम्राज्य पर कलन महाकोशल, 2019, जबलपुर।

आनंद सिंह राणा–

विभागाध्यक्ष (इतिहास),

श्री जानकीरमन महाविद्यालय, जबलपुर